श्रीपञ्चप्रतिक्रमणसूत्र तथा नवस्मरण (फोल्डर नं. ००१५२१)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय निवेदन
विषयानुक्रम
नमस्कार मन्त्र ---------- १
पंचिंदिय सुत्र ---------- ७
खमासमण-सूत्र ---------- ११
गुरु-निमन्त्रण सूत्र ---------- १४
इरियावहियं सूत्र ---------- १६
तस्स उत्तरी सूत्र ---------- २०
अन्नत्थ सूत्र ---------- २२
लोगस्स सूत्र ---------- २६
करेमि भंते सूत्र ---------- ३४
सामायिक पारनेका सूत्र ---------- ३८
जगचिंतामणि चैत्यवन्दन ---------- ४२
जं किंचि सूत्र ---------- ४७
नमो त्थु णं सूत्र ---------- ४८
जावंति चेइयाइं सूत्र ---------- ५८
जावंत के वि साहू सूत्र ---------- ५९
नमोर्हत् सूत्र ---------- ६०
उपसर्गहर स्तोत्र ---------- ६१
जय वीयराय सूत्र ---------- ६६
अरिहंत-चेइयाणं सूत्र ---------- ७०
कल्लाण कंदं सूत्र ---------- ७३
संसारदावानल सूत्र ---------- ८०
पुक्खरवर सूत्र ---------- ८५
सिद्धाणं बुद्धाणं सूत्र ---------- ९१
वेयावच्चगराणं सूत्र ---------- ९६
भगवान हं सूत्र ---------- ९७
सव्वस्स वि सूत्र ---------- ९८
अतिचार आलोचना सूत्र ---------- ९९
अतिचार विचारनेके लिए गाथाएँ ---------- १०२
सुगुरु-वन्दन सूत्र ---------- ११०
सात लाख सूत्र ---------- ११६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अठारह पापस्थानक----------११८
वंदित्तु सूत्र----------१२०
अब्भुट्ठिओ सूत्र ----------१६८
आयरिय-उवज्झाए सूत्र ----------१७३
श्रुतदेवताकी स्तुति----------१७५
क्षेत्रदेवताकी स्तुति----------१७६
कमल-दल स्तुति----------१७७
नमोस्तु वर्धमानाय सूत्र ----------१७८
विशाल लोचन-दलं सूत्र----------१८१
अढ्ढाइज्जेसु सूत्र ----------१८४
वरकनक स्तुति ----------१८७
लघु शान्ति ----------१८९
चउक्कसाय सूत्र----------२०८
भरहेसर-बाहुबली सज्झाय----------२१०
मन्नह जिणाणं – सज्झाय----------२४२
सकल-तीर्थ-वन्दना----------२४६
पोसह लेनेका सूत्र----------२५०
पोसह पारनेका सूत्र----------२५४
संस्तारक पौरुषी----------२५७
पच्चक्खाणके सूत्र----------२७३
स्नातस्या स्तुति ----------२९१
भुवनदेवताकी स्तुति----------२९७
क्षेत्रदेवता स्तुति----------२९८
सकलार्हत स्तोत्र----------२९९
अजिय शान्ति स्तव----------३२६
बड़ी शान्ति ----------३७१
नवस्मरणानि
संतिकरं स्तवन (तृतीयं स्मरणम्)----------३९२
तियपहुत्त स्तोत्रम् (चतुर्थ स्मरणम्)----------४०१
नमिऊण स्तोत्रम् (पञ्चमं स्मरणम्)----------४०२
अजितशान्ति स्तोत्रम् (षष्ठं स्मरणम्)----------४०४
सप्तमं स्मरणम्----------४१०
कल्याणमन्दिर स्तोत्रम् (अष्टमं स्मरणम्) ----------४१५
पाक्षिकाति अतिचार (गुजराती सार्थ)----------४२२
हिन्दी पाक्षिक अतिचार----------४५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपयोगी विषयोंका संग्रह

मुहपत्तीके पचास बोल----४६८
प्रतिक्रमण सम्बन्धी उपयोगी सूचनाएँ----४७७
दैवसिक प्रतिक्रमणकी विधि----४८०
रात्रिक प्रतिक्रमणकी विधि ----४८८
पाक्षिक प्रतिक्रमणकी विधि ----४९३
चातुर्मासिक-प्रतिक्रमणकी विधि----४९७
सांवत्सरिक प्रतिक्रमणकी विधि----४९७
छींक आये तो करनेकी विधि ----४९७
पच्चक्खाण पारनेकी विधि ----४९८
पोषध विधि----४९९
सामायिक लेनेकी विधिके हेतु ----५१४
सामायिक पारनेकी विधिके हेतु----५२१
चैत्यवन्दनकी विधिके हेतु----५२३
दैवसिक प्रतिक्रमणकी विधिके हेतु ----५२६
रात्रिक प्रतिक्रमणकी विधिके हेतु ----५३६
पाक्षिक चातुर्मासिक और सांवत्सिक प्रतिक्रमणकी विधिके हेतु ----५४१
मङ्गल भावना ----५४४
प्रभुके सम्मुख बोलनेके दोहे ----५४५
शत्रुञ्जयको प्रणिपात करते समय बोलनेके दोहे ----५४६
नवाङ्गपूजाके दोहे ----५४६
अष्टप्रकारी पूजाके दोहे ----५४७
प्रभुस्तुति
छे प्रतिमा मनोहारिणी ----५४९
आव्यो शरणे तुमारा----५४९
त्हाराथी न समर्थ अन्य दीननो----५४९
सकल कर्मवारी ----५५०
चैत्यवन्दन----
पद्मप्रभु ने वासुपूज्य----५५०
बारगुण अरिहंतदेव ----५५०
शान्ति जिनेश्वर सोलमा----५५१
ऋषभ लंछन ऋषभदेव----५५१
विमल-केवलज्ञान ----५५२
श्रीशत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र----५५३
आदिदेवल अवलेसरू----५५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीसीमन्धर जगधणी----५५४
श्री सीमन्धर वीतराग----५५४
सीमन्धर परमातमा----५५५
सकल-मङ्गल-परम-कमला----५५५
विधि धर्म जेणे उपदिश्यो----५५६
त्रिगडे बेठा वीर जिन----५५७
महा सुदि आठम दिने----५५८
शासननायक वीरजी----५५८
पर्व पर्युषण गुण नीलो----५५९

स्तवन

प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए----५६०
माता मरुदेवीना नन्द----५६१
ऋषभ जिनश्वर प्रीतम----५६२
पंथडो निहालुं रे----५६३
प्रीतलड़ी बंधाणी रे----५६३
सम्भवदेव ते धुर सेवो----५६४
अभिनन्दन जिन, दरिसण----५६५
दुःख दोहग दूरे टल्यां रे----५६६
धार तरवारनी सोहिली----५६७
शान्तिजिन एक मुझ विनति----५६८
शान्ति जिनेश्वर साचो साहिब----५६९
मनडुं किमहि न बाजे हो----५७०
अन्तरजामी सुण अलवेसर----५७१
सिद्धारथना रे नन्दन----५७२
सुणो चन्दाजी सीमन्धर,----५७२
पुक्खलवइ-विजये जयो रे----५७३
विमलाचल नितु वन्दीए----५७४
सरस वचन रस वरसती----५७५
सुत सिद्धारथ भूपनो रे----५७८
श्रीराजगृही शुभठाम----५७९
श्रीऋषभनुं जन्म कल्याण रे----५८०

स्तुतियाँ

आदि जिनवर राया----५८१
वन्दो जिन शान्ति----५८२
संखेश्वर पासजी पूजीए----५८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जय जय भवि हितकर----५८३
श्रीसीमन्धर जिनवर----५८४
महाविदेह क्षेत्रमां सीमन्धर----५८४
जिनशासन-वांछित-पूरण----५८५
पुण्डरीक गिरि महिमा----५८५
श्री शत्रुञ्जय तीरथ सार----५८६
दिन सकल मनोहर----५८७
श्रावण सुदि दिन पंचमीए----५८८
मङ्गल आठ करी जस आगल----५८९
एकादशी अति रूअडी----५८९
वरसु दिवसमां अषाढ-चोमासुं----५९०
पुण्यनुं पोषण पापनुं शोषण----५९२
सज्झाय
कडवां फल छे क्रोधनां----५९२
रे जीव मान न कीजिए----५९३
समकितनुं मूल जाणीएजी----५९३
तुमे लक्षण जो जो लोभनां रे----५९४
मद आठ महामुनि वारिये----५९५
छन्द तथा पद
नित जपिये नवकार----५९७
समरो मन्त्र भलो नवकार----५९७
वीर जिणेसर केरो शिष्य----५९८
आदिनाथ आदे जिनवर वन्दी----५९९
पूरव पुण्य-उदय करी चेतन----६०१
आशा औरनकी क्या कीजे----६०२
आरतियाँ
जय जय आरती आदि जिणंदा----६०२
अपसरा करती आरती जिन आगे----६०३
मङ्गल दीपक
दीवो रे दीवो मांगलिक दीवो----६०४
चारो मंगल चार आज----६०५
छूटे बोल----६०५
श्रावकके प्रतिदिन धारने योग्य 14 नियम----६०९
सत्रह प्रमार्जना----६१३
शुद्धिपत्रक----६१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org